SHRI SHEEN KAAF NIZAM

Shri Sheen Kaaf Nizam is an eminent Urdu critic, poet, and literary scholar, whose poetry flows at a confluence of the Arabo-Persian and Hindi-Sanskrit tradition.

2. Born on 8th November, 1946 in the princely State of Jodhpur, Shri Nizam's name at birth was Shiv Kishan Bisssa. However, his love for poetic accuracy and discipline led him to a new name Sheen Kaaf Nizam. He had a deep religious upbringing, accuracy of language of the Pushtikar Brahmin household and early an extensive grounding in Sanskrit classics with the phonological accuracy of reading aloud; all traits he carried right across into his Urdu creativity. The grounding in Hindu religion nurtured and equivalent respect for the Islamic scriptures and their literary ramifications. His primarily self learnt Urdu was refined by Persian that he learnt from his treating Janab Muinuddin Ahmad at the Unani dispensary and Urdu linguistic accuracy and finesse from the Urdu critic and editor Mahir ul Qadari of Pakistan, through correspondence with him. He is loved by Hindus and Muslims, Indian and Pakistani, Hindi and Urdu readers and poets alike.

3. Author of over a dozen volumes of poetry and books of criticism, Shri Nizam has mesmerized audiences in over a thousand mushairas in a hundred cities across a dozen countries across the world. Some of his poetry collections are Lamhon Ki Saleeb (1971), Naad (1980), Dasht Mein Dariya (1984), Saaya koi Lamba Na Tha (1988), Saayon ke Saaye mein (1996), Bayaazen Kho Gayee Hain (1997), Rasta yeh Kahin nahi Jaata (2010), Aur Bhi Hai Naam Raste ka (2015). He has also published books in criticism, including Tazkira Maasir Sho'ra-e-Jodhpur (1991), Lafz Dar Lafz (2001), Mani Dar Mani (2010), Lafz Ke Dar Par (2020), Bheed Mein Akela (2001). He has edited many Devnagari volumes of poets like Wazir Agha, Nida Fazli, Kumar Pashi and others besides editing Deewan-e-Ghalib.

4. Shri Nizam's works have been widely published, translated, acclaimed and recorded. His poetry collection “Gumshuda Dair ki Gunjti Ghantiyan” won the Sahitya Akademi Award (2010). He has received numerous national awards such as “Iqbal Samman” (2006), “Begum Akhtar Ghazal Award” (2006), “Mahmood Sheerani Award”, “Marwar Ratna”, “Raja Man Singh Samman”, “Shaane-Urdu Award” (2015), “Acharya Vidya Niwas Mishra Samman” (2016), “Sanskriti-Saurabh Award” (2017), “Shameem Jaipuri Award” (2019), “Gangadhar National Award for Poetry” (2019), “Rajasthan Ratna” (2022), “First Fellowship Award of Rajasthan Urdu Academy” (2023) and “Lifetime Achievement Award” in Qatar.

श्री शीन काफ़ निज़ाम

श्री शीन काफ़ निज़ाम एक प्रख्यात उर्दू आलोचक, कवि और साहिय के विद्वान हैं जिनकी कविता में अरबी–फ़ारसी और हिंदी–संस्कृत परंपराओं का संगम है ।

2. 8 नवम्बर 1946 को जोधपुर रियासत में जन्मे, श्री निज़ाम का जन्म के समय का नाम शिव किशन बिस्सा था। हालांकि, काव्यात्मक सटीकता और अनुशासन के प्रति उनके प्रेम ने उन्हें एक नया नाम शीन काफ़ निजाम दिलाया। पुष्टिकर ब्राह्मण परिवार के धार्मिक माहौल में और भाषा की शुद्धता के साथ उनका पालन–पोषण, पारंपरिक संस्कृत ग्रंथों का गहन ज्ञान, साथ ही बोलकर पढ़ने की ध्वन्यात्मक शुद्धता; ये सभी गुण उन्होंने अपनी उर्दू रचनात्मकता में भी अपनाए। हिंदू धर्म की गहनशिक्षा ने उन्हें इस्लामी धर्मग्रंथों और उनके साहित्यिक विस्तारका भी सम्मान करना सिखाया। मुख्य रूप से खुद से सीखी हुई उर्दू को उन्होंने फारसी से परिष्कृत किया जो उन्होंने यूनानी औषधालय में जनाब मुईनुद्दीन अहमद के उपचार के दौरान सीखी और पाकिस्तान के उर्दू आलोचक तथा संपादक माहिर उल कादरी से पत्र–व्यवहार उर्दू की भाषाई शुद्धता तथा बारीकी सीखी। उन्हें हिंदुओं और मुसलमानों, भारतीयों और पाकिस्तानियों, हिंदी और उर्दू पाठकों एवं कवियों सभी से बराबर का प्यार मिला है।

3. कविता के करीब एक दर्जन खंडों और आलोचना की पुस्तकों के लेखक, श्री निज़ाम ने दुनिया भर के दर्जनों देशों के सैंकड़ों शहरों में हुए हजारों मुशायरों में दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है। उनके कुछ कविता संग्रह हैं, लम्हों की सलीब (1971), नाद (1980), दश्त में दरिया (1984), साया कोई लंबा ना था (1988), सायों के साए में (1996), बयाज़ें खो गई हैं (1997), रास्ता ये कहीं नहीं जाता (2010), और भी है नाम रास्ते का (2015)। उन्होंने आलोचना की पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं, जिनमें तज़किरा मासिर शोरा–ए–जोधपुर (1991), लफ़्ज़ दर लफ़्ज़ (2001), मानी दर मानी (2010), लफ़्ज़ के दर पर (2020), भीड़ में अकेला (2001) शामिल हैं। उन्होंने दीवान–ए–गालिब के संपादन के अलावा वजीर आगा, निदा फाजली, कुमार पाशी जैसे कवियों के कई देवनागरी संस्करणों का संपादन किया है।

4. श्री निज़ाम की रचनाओं का व्यापक तौर पर प्रकाशन, अनुवाद हुआ है और वे प्रशंसित तथा रिकॉर्ड की गई हैं। उनके कविता संग्रह "गुमशुदा दयार की गूंजती घंटियां" को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2010) मिला। उन्हें कई राष्ट्रीय पुरस्कार जैसे कि "इकबाल सम्मान" (2006), "बेगम अख्तर गजल पुरस्कार" (2006), "महमूद शीरानी पुरस्कार", "मारवाड़ रत्न", "राजा मान सिंह सम्मान", "शाने–उर्दू पुरस्कार" (2015), "आचार्य विद्या निवास मिश्र सम्मान" (2016), "संस्कृति–सौरभ पुरस्कार" (2017), "शमीम जयपुरी पुरस्कार" (2019), "गंगाधर राष्ट्रीय काव्य पुरस्कार" (2019), "राजस्थान रत्न" (2022), "राजस्थान उर्दू अकादमी का पहला फैलोशिप पुरस्कार" (2023) और कतर में "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड" मिले हैं।